15527

15527

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्री रघुवीर दास छावनी सेवा ट्रस्ट

❀ अनन्त श्री सर्वेश्वरी ❀

श्रीचारुशीला स्तोत्र

(भाषा टीका)

ललित छन्दानुवाद

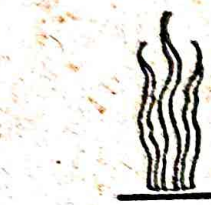

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
1327
अयोध्या
श्री सीताराम दास छावनी

टीकाकारः—

श्री श्री १०८ श्री स्वामी राजकिशोरी वर शरणजी

स्वामी परमाँनन्द जी महाराज

श्रीजानकीघाट रहस्य प्रमोद भवन

जयपुर मंदिर, श्रीअयोध्याजी ।

प्रकाशकः—

जानकी रमण शरण पुजारी

निछावर =)

❀ श्रीसीतारामाभ्याम् नमः ❀
❀ अनंत श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ❀
❀ श्रीगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ❀

श्रीचारुशीला स्तोत्र

भाषा टीका

दोहा—जय मिथिलेश कुमारिका, जय अवधेश कुमार ।
जयति सभुजित लाड़िली, सर्वेश्वरि हितकार ॥ १ ॥
चारु शीला सर्वेश्वरी, परिकर जीवन प्रान ।
रसिकन प्राण अधार जो, बर्णौं तिन को ध्यान ॥ २ ॥

(श्री सर्वेश्वरिजी का ध्यान)

ॐ दीव्य त्पद्म पदारुणां पद नखै श्चन्द्रां शु खर्वी कृताम् । रंभास्तंभ सुपुष्ट चारु जघनां स्वल्पोदरीं श्रीमतीं । मालू रोच्य कुचा मनंङ्ग रमणी लीला विलज्जी कृताम् । सीताराम रसा श्रयैक रसदां श्रीचारु शीलाम्भजे ॥ १ ॥

(ललित छन्द)

दिव्य कंज से खिले अरुण पद, नख प्रकाश ससि लाजै । १
कदलि स्तंभ समान पुष्ट वर, सुभग, सुजङ्घा राजै । २
स्वल्प उदर श्रीफल इव सुन्दर, उच्च उर स्थल सोहैं । ३
निज लीला से काम कामिनिहिं, को लज्जित कर मोहैं । ४
जुगल रसामृत जे अनन्य जन, तिनहि सुरस सुख देवैं । ५
अस श्रीमति चारु शीला प्यारी, सर्वेश्वरि हम सेवैं । ६

॥ १ ॥

कस्तूरी नव बिन्दु चारु चिबुकां बिम्बा धरां स्वर्णाभां। मुक्ता भूषण भूषितांङ्ग रुचिरां नीलाम्बरां मालि नीम्। लीला पद्म कराञ्चितां गुणवतीं गन्धर्वि शीक्षाकरीं। रासोल्लास विधायिनी महरहः श्री चारुशीलाम्भजे ॥ २ ॥

नव मृग मद सुचि चारु चिबुक बिच, बिन्दु अनूपम राजै। ७
बिम्बा फल इव अधर मनोहर, तन द्युति हेंमहि लाजै। ८
मुक्ता मणि भूषण को भूषित रुचिर अंग सुखदाई। ९
नीलाम्बर धर परम सुगंधित, पुष्पन माल सुहाई। १०
नील पदम कर कंज लिये भल, सब गुणगण घर वाली। ११
गाँन वाद्य विद्या प्रवीन अति, जयति सत्रुजित लाली। १२
गंधर्विन शिक्षा प्रद सुखमय, नित दम्पति सुख लेवें। १३
रासोल्लास विधान हेतु जो सर्वेश्वरि हम सेवें। १४।

॥ २ ॥

पुष्पस्या भरणं निदाघ समये संगुंफ्य सर्वाङ्गिकम्। दम्पत्योश्च यथा बिभज्य हरितैं-र्नीलैश्च पीतैंर्नबैः रंङ्गै रंञ्चित मध्य प्रान्त बिशदं बास्तथा पोष्पकं। ह्यानी यानन सुस्मितौ जनकजा रामौ ययालं कृतौ ॥ ३ ॥

सब प्रकार आनन्द कुतूहल सों, सब सखि गुण प्यारी। १
सकल कला कौशल में कुशला, सुख स्वरूप सुख वारी। २
तिन्ह सब सखि मंडल विधान कर, नवल कल्पना धारी। ३
रिझवें जुगल प्रान जीवन को, कुसम सिंगार सँम्हारी। ४

ग्रीषम सिंगार

ग्रीषम समै सुगंधित बहु विधि, आभूषण पुष्पन के। १
रच कर दिव्य दम्पती के अँग, धारन किय निज मन के। २
हरित नील पित नूतन रँग के, विशद वस्त्र पहिरावें। ३
कुसुम सेज पर दोउ सुस्मित मुख, प्राण प्रियहिं पधरावें। ४
सखि सब कुसम सुभूषण रचि रचि, सर्वेश्वरि को देवें। ५
सर्वेश्वरि अति हर्ष मोदयुत, प्रिय सिंगार हित लेवें। ६
यहि विधि नित्य अलंकृत करके, जो सिय पियहिं रिझावें। ७
कृपाशील तिन सर्वेश्वरि पद, वंद महा सुख पावें। ८

॥ ३ ॥

सद्यां पुष्पमयीं प्रकल्प्य सुख दां पुष्पैर्वि-
तानाम्बरं। पुष्पैः कन्दुक मद्भुतं धनुरपि ज्या
मद्भुतंमार्गणम्। पौष्पं क्षत्रमनोहरं च विमलैः
पुष्पैर्वरैश्चामरे। सीताराम समर्पितं च सकल
तां चारुशीलाम्भजे ॥ ४ ॥

ग्रीषम की लीला

कुसुमन मई सर्व सुख देनी, सेज्या सुभग सम्हारें। १
पुष्पन के अम्बर वितान वर, अद्भुत कंदुक सारें। २

धनुष प्रत्यञ्चा बाँन फूल के, रच कर पिय मन मोहें । ३
छत्र चवर पुष्पन के सुन्दर, सेवा वस्तु सु जोहें । ४
यहि विधि सेवा वस्तु समर्पन, कर सिय पिय हर्षावें । ५
तिन्ह श्री चारु शीला सर्वेश्वरि, को हम नितप्रति ध्यावें । ६

॥ ४ ॥

रामे काम सराहते क्वचिदियं सीतामनो मानिनी । रक्ताम्भोज कला कुलाय सदृशा मौनं गृहित्वास्थिता । तस्या मान निवर्तने च बचसां सन्दर्भ संगुम्फनं । कुर्वाणाम्बर बर्णिनीम् प्रिय सखीं चारुशीलाम्भजे ॥ ५ ॥

मान लीला

किसी समय दम्पति मन हरनी, रस मय लीला हेतू । १
रसहिं बढ़ावन सुख सर सावन, प्रगटहिं मोद निकेतू । २
अरुण कमल दल नयनि सुस्वामिनि, श्रीमिथिलेशकिशोरी ।३
मन में मौन मान धर बैठीं, जब निकुञ्ज इक ठोरी । ४
तब विदेहजा मान छुड़ावन, प्रीति बढ़ावन वाली । ५
बहु विधि बचन सुनाय मनोहर, हो मुद हेतु निराली । ६
यहि विधि हर्षहेतु मन हारक, श्रेष्ठ सो सिय सखि प्यारी ।७
चारुशीला दम्पति उरमीला, सेवहिं नित सुखकारी । ८

॥ ५ ॥

पर्य्यङ्के मणि मण्डिते मणि गृहे सर्वर्तु संशोभने। रत्नद्योति तदीपके युवतिभिर्द्वारेषु संरक्षिते। कामोल्लास बिलास विह्वलमना रामो यदा राजते। जानक्यंशभुजो मनोहर तरो रक्ताम्बुजाक्षो बली ॥ ६ ॥

(एकान्त विहार)

मणिमय तल्प रचित मणि मय गृह, रतन सुदीप प्रकासैं। १
सकल ऋतुन के पुष्प लता तरु. शोभित छटा विकासैं। २
अमल कमल दल नयन मनोहर, तर तेहि सेज सुराजैं। ३
अति विहार अनुकूल शक्ति युत, रसिक राज छबि छाजैं। ७
प्रेमोल्लास विलास विह्वली. अरुन नयन सर साजैं। ५
दिये परस्पर भुज अंशों में, प्रीतम प्रिया विराजैं। ६
सर्वेश्वरि सब युथ्थेश्वरि मध, मुख्य युगल रस दाँनी। ७
सोहैं सहज स्वरूप हनुमत को, आनन्द रूप महानीं। ८
दूसर क्रीड़ा रूप अनूपम, युगल प्रेम रस रूपा। ९
गुप्त प्रगट लीला मय मुख्या, आँनद रूप अनूपा। १०
युगल प्राण जीवन पद पङ्कज, परिचर्य्या के हेतू। ११
जिनको आज्ञाको शिर धर सब, सेवहिं मोद निकेतू। १२
नाना वस्तु विलास सुसंचित, कर सब ओर सुठाढ़ो। १३
निजर सेवा सौंज लिये सखि, सब दिन आनँद बाढ़ो। १४
तेहि समये आनँदरस सालिनि, सिय जू प्राण पियाको। १५
निज चातुर्य्य योजनावों से, पुरवे आश्र जिया की। ६

यहि विधि परिकर जीवन हितमय, मन वच कर्म मनाऊँ।१७
श्रीमति चारुशीला देवी पद, कृपा शील नित ध्याऊँ । १८
॥ ६ ॥

तत्पादौ परिचारिका गण मुखं यस्या विधानेन वै नाना वस्तु विलास संचित करं संवर्तते सर्वदा । आनन्दोक्त स्सालिनीम् जनकजा प्राणेश्वरा येष्टदां । चातुर्य्यांञ्चित् लोचना महरहः श्रीचारुशीलाम्भजे ॥ ७ ॥

(आखेट लीला)

जब गज वाजि सहित निज बयबर, सँग लै सखा सनेही । १
हरित बस्त्र धर राजिव लोचन, राज कुमार सुनेही । २
सब मिलि बन मृगया को जावें, हरष सियावर प्यारे । ३
लखि विलम्ब ह्वै विरह विकल सिय, जिय ससोकता धारे । ४
तेहि बढ़ सोक निवारन कारण, सिय हिय आँनद हेतू । ५
कौतुक मोद विनोद स्याम मय, रचहि विनोद निकेतू । ६
ऐसी सिय सुखदा सर्वेश्वरि, श्री चारु शीला गुण गाऊँ । ७
कृपाशील निसि वासर सुख मय, नित्य खवासी पाऊँ । ८
॥ ७ ॥

आखेटाय गते समान सखिभि रामे सरोजानने । ह्यर्त्तुं गैर्गज बाजिभिः परिवृते नीलो-

शुकज्ञा वृते । सीता शोक मुपा गता बिरहिणी तस्या मुदे कौतुका न्या कलप्याति विनोद विस्तृत करां तां चारुशीलाम्भजे ॥ ८ ॥

(प्रेमोत्कर्ष लीला)

किसी समय सिय प्रिय सखियों सह, मोदावेश बस प्यारी ।१
पिय ढिग आने में विलम्ब करि, नेह परीक्षा धारी । २
कुँजान्तर में रही सुरम सिय, अति सय धीर्य सम्हारी । ३
उस समये श्री रघुनन्दन जू, सिय बिन भये दुखारी । ४
कोटि चन्द्र लज्जित मुख पंकज, उदासीनता लाई । ५
सर्वेश्वरि से विनय करत अति, सिय मिलवे हित आई । ६
हमरी प्रिया की प्राप्ति हेतु तुम, मम आनन्द बढ़ावन । ७
अति कल्याण रूप सुख दाता, सिय सों हमें मिलावन । ८
यहि विधि बचन सुनत पिय जू के, सर्वेश्वरि सुख दाँनी । ९
आप सदा आनन्द रूप जब, किमि आनन्द न मानी । १०

(प्रश्न उत्तर)

हे सखि जो सुख स्वरूप मोद गुण, तुम वर्णों मोहि पाहीं । ११
सो सब प्राण प्रिया सियजू सँग, बिनु सियजू कछु नाहीं ।१२
पूरन ब्रह्म सहित सियजू के, बिन सिय शक्ति बिनाहीं । १३
आँनद रहित बिना सियजू के, सखी समुझि मन मांही । १४
सर्वस तत्त्व स्रूप सुख हमरो, श्री मिथिलेश दुलारी । १५
सत चित आँनद हेतु रूप मय, सिय मम प्राण अधारी । १६
सार तत्व सब गोपनीय हम, सखि वर्णों तोहि पाँही । १७

बिन सिय जीवन जान न हमरो, बेगि मिला सिय काँही । १८
हे प्रिय सखे प्राण जीवन वर, भव्य महा सुख रूपा । १९
श्रुति मुनि कहें अनँद रूप तुम, किमि कहुँ दुख अनुरूपा । २०
इमि कहि व्यँग बचन पियजू सों, गइ सिय मन्दिर प्यारी । २१
सिय ढिग जा पिय बिरहातुरता, कहि तो बिन दुख भारी । २२
आनन्द रूप स्वामिनी हमरी, जेहिं बिन पिय सुख नाँहीं । २३
सिय नाँते पिय वश प्रसन्न नित, यह समझहु मन माँहीं । २४
संग लिवाय सिया सुख मूरति, पियहि मिलावन वारी । २५
शक्ति मान शक्ती दोउ हिलमिल, होंय अनूप सुखारी । २६
यहि विधि चारुशीला सर्वेश्वरि, सियापिय सुख सरसावन । २७
कृपाशील तेहि पाद पद्म नित, सुमरहि मोद मचावन । २८

॥ ८ ॥

भव्यं भाव यहे सखीति वचनं रामेस्मरावेशिते, कोटीन्दुर्जित भानने वदति या भव्यं सुखंते सखे। इत्युक्त्या वर मन्दिरे जनकजा, सामीप्य मासादिता। दम्पत्योश्च समागमं कृत वतीतां चारुशीलाम्भजे ॥ ९ ॥

(बन बिहार)

श्री अशोक वाटिका मध्य अति, क्रीड़ा काँनन फूले । १
तरु ग्रह लता भँवन बहु सुन्दर, युगल केलि अनुकूले । २
दाड़िम आम अँजीर आदि मधु, रस मय वृक्ष सु सोहैं । ३

निज त्रय सम्पति के समता को, देव लोक तरु मोहैं । ४
मधु से मतवाले भृंगराजों, के समूह जहँ राजैं । ५
वृक्ष समूह पत्र पुष्पादिक, सम्पति से छवि छाजैं । ६
तेहि वाटिका मध्य वर दम्पति, दिव्य निकुंजहि माँहीं । ७
उमगि प्रेम अनुराग खिले दोउ, मिले दिये गल बाँहीं । ८
खिले अनेक जाति के पङ्कज, मकरंद पूर्ण सुहाये । ९
सीतल सुभग सरोवर मणि मय, घाट सुभग मन भाये । १०
विविध सुवात सुहावन सुखमय, रस पराग भर लाये । ११
युगल प्राण प्रिय की सेवा लह, चित को लेत लुभाये । १२
अति लावण्य सौंदर्य्य सिन्धु प्रिय, सों सिय मिलि सुखपाई । १३
प्रीतमहूँ अति मोद सिंधु में, मगन महाँ मुद लाई । १४
नील पीत छवि धरे परस्पर, पीत नील पट धारे । १५
विपुल अनंद मूर्ति सर्वेश्वरि, लखि दृग पलक न टारे । १६

॥ ६ ॥

भृङ्गैंरा कुल कानने द्रुम चये सम्पत्ति सन्धानके, पद्मा ना मकरन्द संचित सुखे वाते परागां ञ्चिते । खेत्नन्ती जनकात्मजा निज पतिं संश्लिष्य कण्ठे भुजं । तस्या रोप्य सुमेदुराङ्ग विपुला मानन्द सिन्धुप्लुताम् ॥ १० ॥

(रास लीला)

यहि विधि मग्न सदा सर्वेश्वरि, परिकर युत मन माँनीं । १

गाँन सुतानँ तरँग विधानन, सेवहिं दोउ सुख दानी । २
वहुत वाद्य कौशल समूह से, सह अनुराग विधानी । ३
दिव्य दम्पति सुख हेत अनूपम, क्रीड़ा मय रस सानी । ४
अंतरंग क्रीड़ा रस सुख में, सुस्थित सेज पियारे । ५
तेहि समये एकान्ति सेव में, तत्परता अति धारे । ६
यहि विधि चारु शीला सर्वेश्वरि, कृपा शील नित ध्याऊँ । ७
युगल सुसेवा हेत अनूडी, नित्य खवासी पाऊँ । ८

॥ १० ॥

दासीभिः परिवारिता शशिमुखी सं सेवते या मुदां । गानोत्तान विधान वाद्य निचये रागे सुसज्जी कृतां । रत्यन्ते रस सांप्लुते सुखमयं पर्य्यङ्क मास्थापया । दम्पत्योः परिशीलनं कृत वतीतां चारुशीलाम्भजे ॥ ११ ॥

(अस्तुति)

वन्दों सत्र जीत नृप लाली, सिय पिय जन सुख धामा । १
सब सौभाग्य मूल गुण युक्ता, श्यामा रति अभिरामा । २
नित किशोर वय दम्पति सम्पति, सव विधि प्रिय के हेतू । ३
धरि वर पाणि अनूप बीण रव, प्रगटहिं मोद निकेतू । ४
युगल प्राण जीवन मुख शशि में, चित स्थित कर प्यारी । ५
दिव्य केलि में माधुर्य्य सम्पति, नित्य बढ़ावन वारी । ६
निज मुख शशि से अमित चन्द्र द्युति, लज्जित करने वाली । ७

सुभ सौंदर्य्य पूर्ण अंग युक्ता, रति शत लखि लजि हाली । ८
विमल प्रकाश बढ़ावन पावन, परमानंद की मूला । ९
वदौं श्री चारु शीला सर्वेश्वरि हरन सकल भव शूला । १०

॥ १२ ॥

वन्दे श्रीचारुशीलां शुभग गुण युतां श्री प्रिया भाव भाजां श्यामां सौभाग्य मूलां युगल-प्रिय कृतां वीण पाणौ दधानां आस्ये विन्यस्त चितां जित विधु निकरां केलि माधुर्य्य बित्तां सौन्दर्य्यार्द्रां शुभाङ्गां रति शत विमलां तां परानन्दकन्दाम् ॥ १२ ॥

युगल प्रेम की पात्र अनौखी, इन्ह सम इन्हहि सुजानो । ११
इन्ह के वश दोउ प्राण जीवन धन, तन मन सर्वस मानो । १२
जै श्री चारुशीला सुकमारी, युगल प्राण प्रिय जीवन । १३
भव भय भीम रोग निर्वारन, परिकर प्राण सजीवन । १४
दम्पति जीवन प्राण अधारी, लीला कर सुख दैनी । १५
सकल सखिन सेवा सुख दाता, युगल प्रीति मति पैंनी । १६
सुमिरन करत हरत दारुण दुख, सरत महा सुख सारे । १७
युगल रहस रस रास सुप्रवासित, कृपा कटाक्ष निहारे । १८
जेहि बिन कृपा युगल पद पंकज, प्रीति प्रतीति न पूरी । १९
कृपा शील तेहि की निसि बासर, जाँचत नित्य हजूरी । २०

॥ १२ ॥

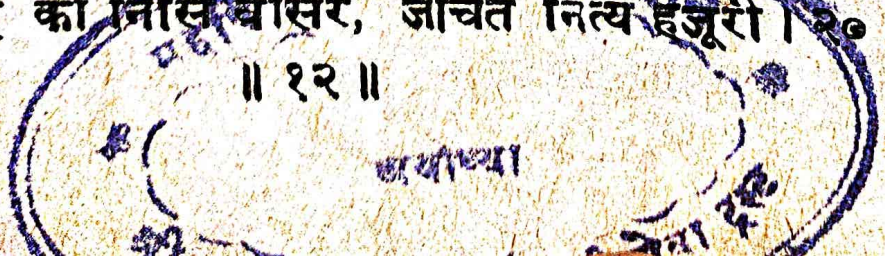

दोहा—जय मिथिलाधिप नंदिनी, जय अवधेश किशोर।
जयति चारु शीला अली, सर्व सखिन सिर मोर॥
जय अठ युथ्थेश्वरी सब, प्रिय परिकर सुखकार।
परमानंद पर बोधनी, कृपा शील बलिहार॥

इति श्रीबृहद्रामायणे महालक्ष्मी कृते
(श्री सर्वेश्वरी चारु शीला स्तोत्र भाषा टीका सम्पूर्ण)

जय श्री जानकी बल्लभ प्यारे ❀ यहि सुमिरन यह ध्यान हमारे

श्रीराम जय राम जय जय राम

जय जय श्री सर्वेश्वरि प्यारी
परिकर जीवन, प्राण सजीवन, दोउ प्रिय सर्वस प्राण अधारी॥
जय चन्द्र कान्ति सत्राजित तनये, महिमा अपरंपार तिहारी।
युगल प्रमोद रहस्य प्रकाशन, कृपा शील तव गति सुखकारी॥

—❀—

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्री माणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट